

# प्राचीन शिक्षा चरण



## शिक्षण के महत्वपूर्ण केंद्र – प्राचीन काल

### 1. तक्षशिला :

- तक्षशिला शहर गांधार राज्य की राजधानी था।
- तक्षशिला को 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व में दुनिया भर में स्थापित पहला विश्वविद्यालय माना जाता है। हर्ष के समय भारत आए सबसे बड़े यात्री ह्वेन त्सांग ने तक्षशिला विश्वविद्यालय का उल्लेख नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों के बराबर किया।
- तक्षशिला ब्राह्मणवादी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र था, जो अन्य देशों के कई छात्रों को आकर्षित करता था।
- तक्षशिला में चिकित्सा अध्ययनों का विशेष महत्व रहा क्योंकि पाणिनि, व्याकरणविद्, कौटिल्य, चंद्रगुप्त मौर्य का मंत्री और चरक, चरक संहिता लिखने वाले चिकित्सा विशेषज्ञ इसका एक हिस्सा हैं।

कोई लोकप्रिय संगठित संस्थान या विश्वविद्यालय नहीं था।



- छात्रों को शिक्षक के निर्णय के अनुसार प्रवेश दिया जाता था, हालाँकि उन्हें पसंद के अनुसार विषय पढ़ाए जाते थे। आमतौर पर, न्यूनतम उम्र सोलह वर्ष से अधिक थी।
- कोई परीक्षा प्रणाली नहीं थी, इसलिए कोई डिग्री या डिप्लोमा नहीं थे।
- मुख्य शाखाएँ वेदत्रयी (तीन वेद), वेदांत, व्याकरण, आयुर्वेद, अठारह सिपस (शिल्प), सैन्य शिक्षा, खगोल विज्ञान, कृषि, वाणिज्य आदि थीं।

- यह भारतीय सैन्य विज्ञान में प्रशिक्षण केंद्र के रूप में लोकप्रिय था। पाणिनी शल्य चिकित्सा में विशेषज्ञ थे और चिकित्सा इसका मुख्य उत्पाद था। अस्त्रशास्त्र के प्रसिद्ध लेखक कौटिल्य की स्थिति में भी ऐसा ही था। कोई जाति भेद नहीं था। तक्षशिला ग्रीक संस्कृति से भी प्रभावित थी।

## 2) नालंदा (बिहार):

- यह बिहार प्रांत में राजगृह के पास स्थित है।
- भगवान बुद्ध के पसंदीदा शिष्य, सारिपुत का जन्म स्थान रहा है, जिन्हें महायान से जुड़ा माना जाता है।
- 427 ईसा पूर्व से 1197 ईसा पूर्व तक सीखने का एक बौद्ध केंद्र। दर्ज इतिहास में पहले महान विश्वविद्यालयों का दर्जा दिया गया।
- इसकी तुलना आसानी से की जा सकती है क्योंकि यह अपने समुदाय के अंतर्राष्ट्रीय चरित्र जैसे ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, पेरिस और हार्वर्ड जैसे आधुनिक समय के महानतम विश्वविद्यालयों में है।
- नालंदा में लगभग 10,000 भिक्षु रहे। इनमें से 1510 शिक्षक थे और शेष 8500 छात्र विभिन्न स्तरों और शिक्षा से संबंधित थे।



- इसने 450 ईसा पूर्व में महत्व प्राप्त किया, जो तीन शताब्दियों तक जारी रहा। ह्वेन सांग 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व में यहां आए थे। गुप्त वंश के दौरान एक महान उन्नति हासिल की गई थी।
- वर्ष 2010 में, नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना बिहार में एक केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में जापान, चीन, थाईलैंड, लाओस, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया के साथ विभिन्न तरीकों में सहयोग करके की गई थी।

- यह विश्वविद्यालय अपने महानगरीय चरित्र के लिए भी प्रसिद्ध था, विशेष रूप से तर्कशास्त्र के संकाय के लिए।
- अध्यापक विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए प्रभारी थे, द्वार पंडी थे।
- आठ बड़े हॉल, जिन्हें समाग्राम नाम दिया गया है और तीन सौ अध्ययन कक्ष मुख्य आकर्षण रहे हैं।
- प्रवेश मानदंड कठिन था। विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के लिए न्यूनतम आयु बीस वर्ष थी, कई सुविधाएं मुफ्त दी जा रही थीं।
- कुलपति को विश्वविद्यालय का चांसलर भी कहा जाता था, शिबाद्र थे, जो सभी सूत्रों और शास्त्रों की पुस्तकों के स्वामी थे।
- शिक्षण के तीन तरीके, अर्थात् मौखिक और व्याख्यात्मक, व्याख्यान और वाद-विवाद तथा चर्चा थे।
- विश्वविद्यालय के पास अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप एक बहुत बड़ा पुस्तकालय था जिसमें नौ मंज़िलें थीं। पुस्तकालय में तीन विभाग थे जिन्हें 'रत्न सागर' के नाम से जाना जाता था।
- बख्तियार खिलजी ने 12वीं शताब्दी ईसा पूर्व के अंत तक विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया।

### 3) वलाभी :

- त्सांग, आई-त्सींग ने भारत के पश्चिमी भाग में वलाभी की स्थापना की।
- केवल धार्मिक शिक्षा का केंद्र नहीं था, अन्य धर्मनिरपेक्ष विषय, जैसे कि अर्थशास्त्र, नीति-शास्त्र (कानून) और चिकित्सा शास्त्र (चिकित्सा) भी यहां पढ़ाए जाते थे।



- यह बौद्ध धर्म से हीनयान सीखने का एक केंद्र था।
- 755 ईस्वी तक यह फला-फूला लेकिन अरब आक्रमण के कारण कुछ हिस्सा नष्ट हो गया। यह तब भी 12वीं शताब्दी तक जारी रहा।

#### 4) विक्रमशिला :

- यह पाल वंश के सम्राट धर्मपाल द्वारा 8वीं शताब्दी में उत्तरी मगध में गंगा नदी के तट पर स्थापित किया गया था।
- यह विश्वविद्यालय धार्मिक शिक्षाओं के लिए प्रसिद्ध था। लगभग 108 विद्वानों को विभिन्न मंदिरों के प्रभारी और आचार्यों के रूप में नियुक्त किया गया था।
- इसने तिब्बत के विद्वानों की एक बड़ी संख्या को आकर्षित किया, जो उच्च शिक्षा के लिए वहाँ आए। विश्वविद्यालय को बाद में छह अलग-अलग कॉलेजों में व्यवस्थित किया गया। केंद्रीय इमारत को विज्ञान भवन कहा गया था।



- द्वार पंडित को भी मुख्य द्वार पर नियुक्त किया गया था।
- सर्वोच्च प्राधिकारी को महाकवि कहा जाता था, जिसे गुरुकुल के कुलपति के रूप में जाना जाता था।
- अध्ययन के मुख्य विषय व्याकरण, तर्कशास्त्र, खगोल विज्ञान दर्शन, तंत्र शास्त्र, कर्मकांड थे। तंत्र शास्त्र को भी बाद में प्रसिद्धि मिली।
- समावर्तन के समय स्नातक और स्नातकोत्तर में उपाधियों को औपचारिक रूप से सम्मानित किया गया, जो बंगाल के शासकों द्वारा दीक्षांत समारोह था।
- इसे 1203 ईसा पूर्व में बख्तियार खिलजी ने नष्ट कर दिया था। विक्रमशिला विश्वविद्यालय तांत्रिक बौद्ध धर्म के लिए प्रसिद्ध था।



### 5. ओदंतपुरी:

- यह विश्वविद्यालय पाल वंश के राजाओं के मगध में आने से बहुत पहले स्थापित हो चुका था।
- ओदंतपुरी उस प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा के स्तर को प्राप्त नहीं कर पाया जो नालंदा या विक्रमशिला ने किया। तब भी लगभग 1000 भिक्षुओं और छात्रों ने निवास किया और वहां शिक्षा प्राप्त की। इसने तिब्बत के छात्रों को भी आकर्षित किया।

### 6. जगदाल:

- इसका निर्माण भी बंगाल के पाल राजा, राम पाल द्वारा किया गया था।
- उन्होंने इसे एक मठ के रूप में बनाया और इसका नाम जगदाल रखा। यह लगभग 100 वर्षों तक बौद्ध शिक्षा के केंद्र के रूप में रहा। 1203 ईसा पूर्व में आक्रमण के दौरान इसे फिर से नष्ट कर दिया गया।



- जगदाल में, कई विद्वान अपने ज्ञान के लिए उल्लेखनीय थे। किताबों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया गया था।

### 7. मिथिला :

- मिथिला ब्राह्मणवादी शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र बन गया। इसे विदेह नाम दिया गया।
- यह राजा जनक से बौद्ध काल तक अपनी महिमा के साथ जारी रहा। बाद में इस स्थान पर भगवान कृष्ण के भक्तों की उत्पत्ति हुई।
- प्रसिद्ध कवि विद्यापति, जिन्होंने हिंदी में लिखा और जयदेव, संस्कृत साहित्य के एक प्रमुख कवि का जन्म यहाँ हुआ।
- 12वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक, साहित्य और ललित कलाओं के अलावा, वैज्ञानिक विषयों को भी वहां पढ़ाया जाता था।

- यहाँ एक नया शास्त्र और तर्क शास्त्र था।
- गंगेश उपाध्याय न्यू लॉजिक (नव्य-न्याय) के एक स्कूल के संस्थापक थे।
- तत्व चिंतामणि नामक एपोच- बनाने का कार्य लिखा गया था।
- मिथिला ने कई अन्य विद्वानों और साहित्यिक हस्तियों को बनाया।
- यह सम्राट अकबर के समय तक ज्ञान के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में फला-फूला।

#### 8. नादिया:

- बंगाल में गंगा और जलंगी नदियों के संगम पर स्थित, इसे पहले नवद्वीप कहा जाता था। नादिया विश्वविद्यालय में शिक्षा तीन केंद्रों नवद्वीप, शांतिपुर और गोपालपुरा में प्रदान की गई थी।
- जयदेव द्वारा गीता गोविन्द के गीत यहाँ गूँजते हैं।
- तर्क की एक पाठशाला रघुनाथ शिरोमणि के लिए अस्तित्व में थी।
- चर्चा में सीखना और दक्षता को इस विश्वविद्यालय के एक शिक्षक के लिए एक अनिवार्य समीकरण माना जाता था।

#### 9. उज्जैन :

- यह मध्य प्रदेश में स्थित है, जिसे पहले अवन्ती कहा जाता था।
- यह गणित और खगोल विज्ञान सहित अपने धर्मनिरपेक्ष शिक्षण के लिए प्रसिद्ध था।

#### 10. सलोतगी

- यह कर्नाटक में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।
- इसके छात्रों लिए 27 छात्रावास थे जो विभिन्न प्रांतों से आए थे।
- यह कॉलेज 945 ईसा पूर्व में कृष्ण III के मंत्री, नारायण द्वारा विवाह और अन्य समारोहों में घरों, भूमि और कर के राजस्व के साथ संपन्न था।

#### 11. एन्नइरम

- तमिलनाडु में स्थित 340 छात्रों को मुफ्त बोर्डिंग और ट्यूशन प्रदान किया गया।
- दक्षिण भारत में शिक्षण के अन्य महत्वपूर्ण केंद्र श्रृंगेरी और कांची थे।

## **IMPORTANT CENTERS OF LEARNING - Ancient Times**

### 1. **Taxila:**

- The town of Taxila was the capital of Kingdom of Gandhar.
- Taxila is considered as the first university established across the globe in 7th century BCE. The greatest traveler Hiuen Tsang who visited India during the time of Harsha mentioned the university of taxila to be at par with Nalanda and Vikramshila universities.
- Taxila was an important centre of Brahmanical education, attracting many students from other nations.
- The medical studies in Taxila held special importance as the likes of Panini, the grammarian, Kautilya, Chandragupta Maurya's Minister, and Charaka, a medical expert who wrote Charak Samhita forms a part of it.

There was no popularly organized institution or university.



- The students were admitted as per decision of the teacher, though they were taught subjects as per choice. Usually, the minimum age was more than sixteen years.
- There was no exam system, so there were no degrees or diplomas.



- The main branches were Vedatrayi (Three Vedas), Vedanta, Vyakaran, Ayurveda, eighteen Sippas (crafts), military education, astronomy, agriculture, commerce etc.
- It was popular as training centre in Indian Military science. Panini was an expert in Surgery and Medicine was its main product. The same was the case for Kautiyla, the famous author of Arthashastra. There was no caste distinction. Taxila had also been influenced by Greek culture.

## 2) Nalanda (Bihar):

- It is located near Rajgriha in the province of Bihar.
- has been the birth place of Sariputta, a favourite disciple of Lord Buddha, who is considered to be associated with Mahayana.
- A Buddhist centre of learning from 427 CE to 1197 CE. Accorded the status of the first great universities' in recorded history.
- It could have been easily compared to due to it the international character of its community to the greatest universities of modern time like Oxford, Cambridge, Paris and Harvard.
- Around 10,000 monks stayed at nalanda. Of these, 1510 were teachers and the remaining 8500 were student belonging to various levels and education.



- It gained importance in the 450 CE, that continued for three centuries. Hiuen Tsang came here in 7th century CE. A great progress was achieved during Gupta dynasty.
- In year 2010, Nalanda University was set up in Bihar as a central University with Japan, China, Thailand, Laos, Singapore, Australia by collaborating in various manners.
- This university was also renowned for its cosmopolitan character, specially for its faculty of Logic.
- The teacher was the incharge for admission to the university was Dwar Pandi.
- Eight big halls named as Samgharama and the three hundred study chambers have been the main attraction.
- The admission criteria was tough. The minimum age was twenty years for getting admission into the university, many facilities were being offered free of cost.
- The Kulpati also called as Chancellor of the University was Shibadra who was a master of all Sutras and Shastras books.
- There were three methods of teaching, viz verbal and explanatory, lectures and debates and discussions.
- The university had a very big library corresponding to its reputation that had nine storeys. The library had three departments known as 'Ratna Sagar'.
- Bakhtiar Khilji destructed the university by the end of 12th century CE.

### 3) Valabhi:

- Tsang, I-Tsing founded Valabhi in the western side of India.
- was not just a center of religious education as of other secular subjects, such as Arthasastra (economics,) Niti-Shastra (law) and Chikista Sastra (medicine ) were also taught here.



- It was a center of learning for Hinayana form of Buddhism.
- till 755 CE it flourished but some portion were destroyed due to Arab invasion. It still continued till 12th century.

#### 4) Vikramshila:

- It was set up and established by the Emperor Dharampala of the Pala dynasty in the 8th century in Northern Magadh on the bank of the river Ganges.
- University was famous for religious teachings. Around 108 scholars were appointed as the incharge and Acharyas of the various temples.
- It attracted a large number of scholars from Tibet, who came there for higher studies. The university was later organized into six different colleges. The central building was called the Vigyan Bhawan.



- Dwar pandit was also appointed at the main gate.

- The highest authority was called as Mahasthavir, being known as the Kulpati of the Gurukula.
- The main subjects of study were Vyakaran, Logic, astronomy Philosophy, Tantra Shastra, Karamkanda. Tantra Shastra too gained prominence later.
- Degrees were conferred on the graduates and post-graduates at the time of Samavartana ceremony, which was the Convocation by the rulers of Bengal.
- It was destroyed by Bhaktiyar Khilji in 1203 CE. The university of Vikramasila was renowned for the Tantric Buddhism.

#### 5. **Odantapuri:**

- This university had been established long before the Kings of Pala dynasty came into power in Magadha.
- Odantpuri could not attain the level of fame and repute which either Nalanda or Vikramshila had accomplished. Still nearly 1000 monks and students resided and received education there. It attracted students from Tibet too.

#### 6. **Jagaddala:**

- It was also constructed by the Pala King, Ram Pal of Bengal.
- He made it as a monastery and named it as Jagaddala. It remained as the centre of Buddhist education for about 100 years. It was again destroyed during invasion in 1203 CE.



- In Jagaddala, there were many scholars notable for their knowledge. The books were translated in Tibetan language.

#### 7. **Mithila :**

- Mithila became a prominent seat of Brahmanical education. It was named as Videha.
- It continued with its glory from Raja Janak upto Buddhist period. Late on this place produced devotees of Lord Krishna.
- Famous poet Vidyapati, who had written in Hindi and Jaidev, a prominent poet of Sanskrit literature was born here.
- From 12th century to 15th century, besides literature and fine arts, scientific subjects were also taught there.
  - There was a Nyaya Shastra and Tarka Shastra.
  - Gangesha Upadhyaya was a founder of a school of New Logic (Navya-Nyaya).
  - Epoch- Making work named Tattva Chintamani had been written.
- Mithila produced a number of other scholars and literary celebrities.
- It flourished as an important centre of knowledge till the time of Emperor Akbar.

#### 8. **Nadia:**

- Situated at the confluence of Ganga and Jalangi rivers in Bengal, it was formerly called Navadweep. Education in Nadia University was imparted at three centres namely Navadweep, Shantipur and Gopaalpara.
- The lyrics of Gita Govind by Jaideva reverberated here.
- A school of logic owed its existence to Raghunatha Shiromani.
- Learning and efficiency in discussion was considered to be an essential qualification of a teacher of this university.



9. **Ujjain:**

- Located in Madhya Pradesh, previously called as Avanti.
- It was famous for its secular learning including mathematics and astronomy.

10. **Salotgi**

- It was an important center of learning in Karnataka.
- It had 27 hostels for its student who hailed from different provinces.
- This college was richly endowed in 945 CE by Narayana the minister of Krishna III with the revenues of houses, land and levies on marriages and other ceremonies.

11. **Ennayiram**

- Situated in Tamilnadu provided free boarding and tuition to 340 students.
- Other important centers of learning in South India were Sringeri and Kanchi.

gradeup